

श्रीमद्भागवतम्

प्रथम स्कन्ध



श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 14

भगवान् श्रीकृष्ण का अन्तर्धान
होना

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: श्री सूत गोस्वामी ने कहा : भगवान् श्रीकृष्ण तथा अन्य मित्रों को मिलने तथा भगवान् से उनके अगले कार्यकलापों के विषय में जानने के लिए अर्जुन द्वारका गये।

श्लोक 2: कुछ मास बीत गये, किन्तु अर्जुन वापस नहीं लौटे। तब महाराज युधिष्ठिर को कुछ अपशकुन दिखने लगे, जो अपने आप में अत्यन्त भयानक थे।

श्लोक 3: उन्होंने देखा कि सनातन काल की गति बदल गई है और यह अत्यन्त भयावह था। ऋतु सम्बन्धी नियमितताओं में व्यतिक्रम हो रहे थे। सामान्य लोग अत्यन्त लालची, क्रोधी तथा धोखेबाज हो गये थे। वे देख रहे थे कि वे सभी जीविका के अनुचित साधन अपना रहे थे।

श्लोक 4: सारे सामान्य लेन-देन, यहाँ तक कि मित्रों के बीच के व्यवहार तक, कपट के कारण दूषित हो गये थे। पारिवारिक मामलों में पिता, माता तथा पुत्रों के बीच, शुभचिन्तकों के

बीच तथा भाई-भाई के बीच सदैव गलतफहमी होती थी। यहाँ तक कि पति तथा पत्नी के बीच भी सदैव तनाव तथा झगड़ा होता रहता था।

श्लोक 5: कालक्रम में ऐसा हुआ कि लोग लोभ, क्रोध, गर्व इत्यादि के अभ्यस्त हो गये। महाराज युधिष्ठिर ने इन सब अपशकुनों को देखकर अपने छोटे भाई से कहा।

श्लोक 6: महाराज युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाई भीमसेन से कहा : मैंने अर्जुन को द्वारका भेजा था कि वह अपने मित्रों से भेंट कर आये और

भगवान् श्रीकृष्ण से उनका कार्यक्रम जानता आये।

श्लोक 7: जब से वह गया है, तब से सात मास बीत चुके हैं, फिर भी वह लौटा नहीं। मुझे ठीक से पता नहीं है कि वहाँ क्या हो रहा है।

श्लोक 8: क्या वे अपनी मर्त्यलोक की लीलाओं को छोड़ने जा रहे हैं, जैसा देवर्षि नारद ने इंगित किया था? क्या वह समय आ भी चुका है?

श्लोक 9: केवल उन्हीं से हमारा सारा राजसी ऐश्वर्य, अच्छी पत्नियाँ,

जीवन, सन्तान, प्रजा के ऊपर नियंत्रण, शत्रुओं पर विजय तथा उच्चलोकों में भावी निवास, सभी कुछ सम्भव हो सका। यह सब हम पर उनकी अहैतुकी कृपा के कारण है।

श्लोक 10: हे पुरुषव्याघ्र, जरा देखो तो कि दैवी प्रभावों, पृथ्वी की प्रतिक्रियाओं तथा शारीरिक वेदनाओं के कारण उत्पन्न होने वाली कितनी खतरनाक आपदाएँ हमारी बुद्धि को मोहित करके निकट के भविष्य में आने वाले खतरे की सूचना दे रही हैं।

श्लोक 11: मेरे शरीर का बाँयाँ
भाग, मेरी जाँघें, भुजाएँ तथा आँखें
बारम्बार फडक रही हैं। भय से मेरा
हृदय धडक रहा है। ये सब अनिष्ट
घटना को सूचित करने वाले हैं।

श्लोक 12: हे भीम, जरा देखो तो
यह सियारिन किस तरह उगते हुए
सूर्य को देखकर रो रही है और अग्नि
उगल रही है और यह कुत्ता किस
तरह निर्भय होकर, मुझ पर भूक रहा
है।

श्लोक 13: हे भीमसेन, हे पुरुष-
व्याघ्र, अब गाय जैसे उपयोगी पशु

मेरी बाईं ओर से निकले जा रहे हैं
और गधे जैसे निम्न पशु, मेरी
प्रदक्षिणा कर रहे हैं। मेरे घोड़े मुझे
देखकर रोते प्रतीत होते हैं।

श्लोक 14: जरा देखो तो! यह
कबूतर मानो मृत्यु का दूत हो।
उल्लुओं तथा उनके प्रतिद्वन्द्वी कौवों
की चीख मेरे हृदय को दहला रही है।
ऐसा प्रतीत होता है मानो वे सम्पूर्ण
ब्रह्माण्ड को शून्य बना देना चाहते हैं।

श्लोक 15: जरा देखो तो, किस
तरह धुँआ आकाश को घेरे हुए है।
ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पृथ्वी

तथा पर्वत काँप रहे हों। बिना बादलों की यह गर्जन तो जरा सुनो और आकाश से गिरते ब्रजपात को तो देखो!

श्लोक 16: वायु तेजी से बह रही है और वह सर्वत्र धूल बिखरा कर अँधेरा उत्पन्न कर रही है। बादल सर्वत्र रक्तिम आपदाओं की वर्षा कर रहे हैं।

श्लोक 17: सूर्य की किरणें मन्द पड़ रही हैं और तारे परस्पर भिड़ रहे प्रतीत हो रहे हैं। भ्रमित जीव जलते हुए तथा रोते प्रतीत हो रहे हैं।

श्लोक 18: नदियाँ, नाले,
तालाब, जलाशय तथा मन सभी
विक्षुब्ध हैं। घी से अग्नि नहीं जल रही
हैं, यह कैसा असामान्य समय है?
आखिर क्या होने वाला है?

श्लोक 19: बछड़े न तो गौवों के
थनों में मुँह लगा रहे हैं, न गौवें दूध
देती हैं। वे आँखों में आँसू भरे खड़ी-
खड़ी रम्भा रही हैं और बैलों को
चरागाहों में कोई प्रसन्नता नहीं हो
रही है।

श्लोक 20: मन्दिर में अर्चाविग्रह
रोते, शोक करते तथा पसीजते प्रतीत

हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि वे प्रयाण करनेवाले हैं। सारे नगर, ग्राम, कस्बे, बगीचे, खानें तथा आश्रम अब सौन्दर्यविहीन तथा समस्त आनन्द से रहित हैं। मैं नहीं जानता कि हम पर किस तरह की विपत्तियाँ आनेवाली हैं।

श्लोक 21: मैं सोचता हूँ कि पृथ्वी पर की ये सारी उथल-पुथल विश्व के सौभाग्य की किसी बहुत बड़ी हानि को सूचित करनेवाले हैं। संसार भाग्यशाली था कि उस पर भगवान् के चरणकमलों के पदचिन्ह अंकित हुए।

किन्तु ये लक्षण यह सूचित कर रहे हैं
कि अब आगे ऐसा नहीं रह पाएगा।

श्लोक 22: हे ब्राह्मण शौनक, जब
महाराज युधिष्ठिर उस समय पृथ्वी पर
इन अशुभ लक्षणों को देख रहे थे और
अपने मन में इस प्रकार सोच रहे थे,
तभी अर्जुन यदुओं की पुरी (द्वारका)
से वापस आ गये।

श्लोक 23: जब उसने राजा के
चरणों पर नमन किया, तो राजा ने
देखा कि उनकी निराशा अभूतपूर्व थी।
उनका सिर नीचे झुका था और उनके
कमल-नेत्रों से आँसू झर रहे थे।

श्लोक 24: हृदय की उद्विग्नताओं के कारण अर्जुन को पीला हुआ देखकर, राजा ने नारदमुनि द्वारा बताये गये संकेतों का स्मरण करते हुए, मित्रों के मध्य में ही उनसे पूछा।

श्लोक 25: महाराज युधिष्ठिर ने कहा : मेरे भाई, मुझे बताओ कि हमारे मित्र तथा सम्बन्धी, यथा मधु, भोज, दशार्ह, आर्ह, सात्वत, अन्धक तथा यदुवंश के सारे सदस्य, अपने दिन सुख से बिता रहे हैं न?

श्लोक 26: मेरे आदरणीय नाना शूरसेन प्रसन्न तो हैं? तथा मेरे मामा वसुदेव तथा उनके छोटे भाई ठीक से तो हैं?

श्लोक 27: देवकी इत्यादि उनकी सातों पत्नियाँ परस्पर बहिनें हैं। वे तथा उनके पुत्र एवं बहुएँ सब सुखी तो हैं?

श्लोक 28-29: क्या उग्रसेन जिसका पुत्र दुष्ट कंस था तथा उनका छोटा भाई अब भी जीवित हैं? क्या हृदीक तथा उसका पुत्र कृतवर्मा कुशल से हैं? क्या अक्रूर, जयन्त,

गद, सारण तथा शत्रुजित प्रसन्न हैं?
भक्तों के रक्षक भगवान् बलराम कैसे
हैं?

श्लोक 30: वृष्णि-कुल के महान्
सेनापति प्रद्युम्न कैसे हैं? वे प्रसन्न
तो हैं? और भगवान् के पूर्ण अंश
अनिरुद्ध ठीक से तो हैं?

श्लोक 31: कृष्ण के सभी सेना-
नायक पुत्र यथा सुषेण, चारुदेष्ण,
जाम्बवती-पुत्र साम्ब तथा ऋषभ
अपने-अपने पुत्रों समेत ठीक से तो
रह रहे हैं?

श्लोक 32-33: इसके अतिरिक्त, श्रुतदेव, उद्धव तथा अन्य, नन्द, सुनन्द तथा अन्य मुक्तात्माओं के नायक, जो भगवान् के नित्यसंगी हैं, भगवान् बलराम तथा कृष्ण द्वारा सुरक्षित तो हैं? वे सब अपना- अपना कार्य ठीक से चला रहे हैं न? वे जो हमसे नित्य मैत्री-पाश में बँधे हैं, हमारी कुशलता के बारे में पूछते तो हैं?

श्लोक 34: पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण, जो गायों, इन्द्रियों तथा ब्राह्मणों को आनन्द प्रदान करने

वाले हैं और अपने भक्तों के प्रति अत्यन्त वत्सल हैं, अपने मित्रों से घिर कर, द्वारकापुरी में पवित्र सभा का भोग तो कर रहे हैं?

श्लोक 35-36: परम भोक्ता आदि भगवान् तथा जो मूल भगवान् अनन्त हैं, बलराम यदुवंश रूपी सागर में समस्त ब्रह्माण्ड के कल्याण, सुरक्षा तथा उन्नति के लिए निवास कर रहे हैं। और सारे यदुवंशी भगवान् की भुजाओं द्वारा सुरक्षित रहकर, वैकुण्ठवासियों की भाँति जीवन का आनन्द उठा रहे हैं।

श्लोक 37: समस्त सेवाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण, भगवान् के चरणकमलों की शुश्रूषा करने मात्र से, द्वारका-स्थित सत्यभामा के अधीक्षण में रानियों ने भगवान् को प्रेरित किया कि वे देवताओं को जीत लें। इस प्रकार रानियाँ उन वस्तुओं का भोग कर रही हैं, जो वज्र के नियंत्रक की पत्नियों द्वारा भोग्य हैं।

श्लोक 38: बड़े-बड़े यदुवंशी वीर भगवान् श्रीकृष्ण की बाहुओं द्वारा सुरक्षित रहकर सभी प्रकार से निर्भय बने रहते हैं। अतएव उनके चरण उस

सुधर्मा के सभा-भवन में पड़ते रहते हैं,
जो सर्वश्रेष्ठ देवताओं के लिए है,
किन्तु जो उनसे छीन लिया गया था।

श्लोक 39: मेरे भाई अर्जुन, मुझे
बताओ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक तो
है? ऐसा लगता है कि तुम्हारे शरीर
की कान्ति खो गई है। क्या द्वारका में
दीर्घकाल तक रहने से, अन्यों द्वारा
असम्मान तथा उपेक्षा दिखलाने से
ऐसा हुआ है?

श्लोक 40: कहीं किसी ने तुम्हें
अपमानजनक शब्द तो नहीं कहे? या
तुम्हें धमकाया तो नहीं? क्या तुम

याचक को दान नहीं दे सके? या किसी से अपना वचन नहीं निभा पाये?

श्लोक 41: तुम तो सदा से सुपात्र जीवों के यथा ब्राह्मणों, बालकों, गायों, स्त्रियों तथा रोगियों के रक्षक रहे हो। क्या तुम उनके शरण माँगे जाने पर उन्हें शरण नहीं दे सके?

श्लोक 42: क्या तुमने दुश्चरित्र स्त्री से समागम किया है अथवा सुपात्र स्त्री के साथ तुमने भद्र व्यवहार नहीं किया? अथवा तुम मार्ग में किसी ऐसे

व्यक्ति के द्वारा पराजित किये गये हो,
जो तुमसे निकृष्ट है या तुम्हारे
समकक्ष हो?

श्लोक 43: क्या तुमने उन वृद्धों
तथा बालकों की परवाह नहीं की, जो
तुम्हारे साथ भोजन करने के योग्य
थे? क्या उन्हें छोड़कर तुमने अकेले
भोजन किया है? क्या तुमने कोई
अक्षम्य गलती की है, जो निन्दनीय
मानी जाती है?

श्लोक 44: अथवा कहीं ऐसा तो
नहीं है कि तुम इसलिए रिक्त अनुभव
कर रहे हो, क्योंकि तुमने अपने घनिष्ठ

मित्र भगवान् कृष्ण को खो दिया हो?
हे मेरे भ्राता अर्जुन, तुम्हारे इतने
हताश होने का मुझे कोई अन्य कारण
नहीं दिखता।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव